तताँरा-वामीरो कथा

सारांश

यह पाठ अंदमान निकोबार द्वीपसमूह के एक प्रचलित लोककथा पर आधरित है। अंदमान निकोबार दक्षिणी द्वीप लिटिल अंदमान है जो की पोर्ट ब्लेयर से लगभग सौ किलोमीटर दूर स्थित है। इसके बाद निकोबार द्वीपसमूह का पहला प्रमुख द्वीप कार-निकोबार है जो की लिटिल अंदमान से 96 कि.मी. दूर है। पौराणिक जनश्रुति के अनुसार ये दोनों द्वीप पहले एक ही थे। इनके अलग होने के पीछे एक लोककथा आज भी प्रचलित है।

जब दोनों द्वीप एक थे तब वहां एक सुन्दर सा गाँव था जहाँ एक सुन्दर और शक्तिशाली युवक रहा करता था जिसका नाम तताँरा था। वह एक नेक और ईमानदार व्यक्ति था और सदा दूसरों की मदद के लिए तत्पर रहता था। निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे। वह अपने गाँव के लोगों के साथ सारे द्वीप की भी सेवा करता था। वह पारंपरिक पोशाक में रहने के साथ अपनी कमर में सदा एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता था। वह कभी तलवार का उपयोग नही करता था, लोगों का मत था की तलवार में दैवीय शक्ति थी।

एक शाम तताँरा दिनभर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र के किनारे टहलने निकल पड़ा। सूरज डूबने को था, समुद्र से ठंडी बयारें आ रहीं थीं। पक्षियाँ अपने घरों को वापस जा रहीं थीं। तताँरा सूरज की अंतिम किरणों को समुद्र पर निहारा रहा था तभी उसे कहीं पास से एक मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया सुध-बुध खोने लगा। लहरों की एक प्रबल वेग ने उसे जगाया। वह जिधर से गीत के स्वर आ रहे थे उधर बढ़ता गया। उसकी नजर एक युवती पर पड़ी जो की वह श्रृंगार गीत गा रही थी। अचानक एक समुद्री लहर उठी और युवती को भिगों दिया जिसके हड़बड़ाहट में वह अपना गाना भूल गयी। तताँरा ने विनम्रतापूर्वक उसके मधुर गायन छोड़ने के पीछे वजह पूछी। युवती उसे देखकर चौंक गयी और ऐसे असंगत प्रश्न का कारण पूछने लगी। तताँरा उससे बार-बार गाने को बोल रहा था। अंत में तताँरा को अपनी भूल का अहसास हुआ और उसने क्षमा माँगकर उसका नाम पूछा। उसने अपना नाम वामीरो बताया। तताँरा ने उसे अपना नाम बताते हुए कल फिर आने का आग्रह किया।

वामीरो जब अपने घर लपाती पहुँची तो उसे भीतर से बैचैनी होने लगी। उसने तताँरा के व्यक्तित्व में वह सारा गुण पाया जो की वह अपने जीवन साथी के बारे में सोचती थी परन्तु उनका संबंध परंपरा के विरुद्ध था इसलिए उसने तताँरा को भूलना ही बेहतर समझा। किसी तरह दोनों की रात बीती। दूसरे दिन तताँरा लपाती के समुद्री चट्टान पर शाम में वामीरो की प्रतीक्षा करने लगा। सूरज ढलने को था सहसा तभी उसे नारियल के झुरमुठों के बीच एक आकृति दिखाई दी जो की वामीरो ही थी। अब दोनों रोज शाम में मिलते और एक दूसरे को एकटक निहारते खड़े रहते। लपाती के कुछ युवकों ने उन दोनों के इस मूक प्रेम को भाँप लिया और यह बात हवा की तरह सबको मालूम हो गयी। परन्तु दोनों का विवाह संभव ना था क्योंकि दोनों अलग-अलग गाँव से थे। सबने दोनों को समझाने का पूरा प्रयास किया किन्तु दोनों अडिग रहे और हर शाम मिलते रहे।

कुछ समय बाद तताँरा के गाँव पासा में पशु-पर्व का आयोजन था जिसमें सभी गाँव हिस्सा लिया करते। पर्व में पशुओं के प्रदर्शन के के अतिरिक्त युवकों की भी शक्ति परीक्षा होती साथ ही गीत-संगीत और भोजन का भी आयोजन होता। शाम में सभी लोग पासा आने लगे और धीरे-धीरे विभिन्न कार्यक्रम होने लगे परन्तु तताँरा का मन इनमें ना होकर वामीरो को खोजने में व्यस्त था। तभी उसे नारियल के झुंड के पीछे वामीरो दिखाई दी। वह तताँरा को देखते ही रोने लगी। तताँरा विह्वल हुआ। रुदन का स्वर सुनकर वामीरो की माँ वहां पहुँच गयीं और उसने तताँरा को बुरा-भला कहकर अपमानित किया। गाँव के लोग भी तताँरा के

विरोध में आवाज उठाने लगे। यह तताँरा के लिए असहनीय था। उसे परंपरा पर क्षोभ हो रहा था और अपनी असहायता पर गुस्सा। अचानक उसका हाथ तलवार की मूठ पर जा टिका और क्रोध में उसने अपनी तलवार निकालकर धरती में घोंप दिया और अपनी पूरी ताकत लगाकर खींचने लगा। जहाँ से लकीर खींची थी वहाँ से धरती में दरार आने लगी। द्वीप के दो टुकड़े हो चुके थे एक तरफ तताँरा था और दूसरी तरफ वामीरो। दूसरा द्वीप धँसने लगा। तताँरा को जैसे ही होश आया उसने दूसरे द्वीप का कूद कर सिरा पकड़ने की कोशिश की परन्तु सफल ना हो सका और नीचे की तरफ फिसलने लगा। दोनों के मुँह से एक दूसरे के चीख निकल रही थी।

तताँरा लहूलुहान अचेत पड़ा था। बाद में उसका क्या हुआ कोई नहीं जानता। इधर वामीरो पागल हो गयी और उसने खाना-पीना छोड़ दिया। लोगों ने तताँरा को खोजने का बहुत प्रयास किया परन्तु वह नही मिला। आज ना तताँरा है ना वामीरो परन्तु उनकी प्रेमकथा घर-घर में सुनाई जाती है। इस घटना के निकोबारी एक दूसरे गाँवों में वैवाहिक संबंध स्थापित करने लगे। तताँरा की तलवार से कार-निकोबार से जो दो टुकड़े उसमें दूसरा लिटिल अंदमान है।

लेखक परिचय

लीलाधर मंडलोई

इनका जन्म 1954 को जन्माष्टमी के दिन छिंदवाड़ा जिले के एक छोटे से गाँव गुढ़ी में हुआ। इनकी शिक्षा-दीक्षा भोपाल और रायपुर में हुई। प्रसारण की उच्च शिक्षा के लिए 1987 में कॉमनवेल्थ रिलेशंस ट्रस्ट, लंदन की ओर से आमंत्रित किये गए। इन दिनों प्रसार भारती दूरदर्शन के महानिदेशक का कार्यभार संभाल रहे हैं।

प्रमुख कार्य

कृतियाँ – घर-घर घूमा, रात-बिरात, मगर एक आवाज़, देखा-अनदेखा और काला पानी।

कठिन शब्दों के अर्थ

1. श्रृंखला – कम्र
2. आदिम – प्रारम्भिक
3. विभक्त – बँटा हुआ
4. लोककथा – जन-समाज में प्रचलित कथा
5. आत्मीय – अपना
6. विलक्षण – साधारण
7. बयार – शीतल मंद हवा
8. तंद्रा -ऊँघ
9. चैतन्य – चेतना
10. विकल – बैचैन

11. संचार – उत्पन्न होना
12. असंगत – अनुचित
13. सम्मोहित – मुग्ध
14. झुंझुलाना – चिढ़ना
15. अन्यमनस्कता – जिसका चित्त कहीं और हो
16. निनिर्मेष – बिना पलक झपकाये
17. अचम्भित – चकित
18. रोमांचित – पुलकित
19. निश्चल – स्थिर
20. अफवाह – उड़ती खबर
21. उफनना – उबलना
22. शमन – शांत करना
23. घोंपना – भोंकना

पाठ का सार

अंदमान निकोबार का अंतिम दक्षिणी द्वीप लिटिल अंदमान है। यह पोर्ट ब्लेयर से लगभग सौ किलोमीटर दूर स्थित है। इसके बाद निकोबार द्वीपसमूह का पहला प्रमुख द्वीप कार-निकोबार है। यह लिटिल अंदमान से 96 कि.मी. दूर है। एक पौराणिक जनश्रुति के अनुसार ये दोनों द्वीप समूह पहले एक ही थे। इनके विभक्त होने की लोककथा आज भी प्रचलित है।

जब ये दोनों द्वीप एक ही थे, उस समय वहाँ एक सुंदर-सा गाँव था। वहाँ तताँरा नाम का सुंदर एवं शक्तिशाली युवक रहता था। वह एक नेक और मददगार व्यक्ति था। सबकी सहायता करना वह अपना धर्म समझता था। निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे। वह हर मुसीबत में द्वीपवासियों की मदद किया करता था। उसका व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक था। पारंपरिक पोशाक के साथ वह अपनी कमर से एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता था। उसकी तलवार में दिव्य शक्ति थी। वह उसका उपयागे किसी के सामने नहीं करता था।

एक दिन तताँरा घूमने निकल पड़ा। सूरज समुद्र से लगे क्षितिज तले डूबने को था। समुद्र से ठंडी बयारें आ रही थीं। पक्षियों की सायंकालीन चहचहाटें शनैः-शनैः क्षीण हो रही थीं। तताँरा विचारों में डूब गया। वह समुद्री बालू पर बैठकर समुद्र पर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को निहारने लगा, तभी उसे लहरों के बीच बहता हुआ मधुर गीत सुनाई दिया। वह सुध-बुध खोकर गीत की दिशा में आगे बढ़ने लगा। उसकी नज़र उस युवती पर पड़ी जो एक श्रृगांरपरक गीत गा रही थी। तताँरा को देखकर वह चुप हो गई। तताँरा ने पूछा कि गीत क्यों रोक दिया? तुम पुनः गीत गाओ। तताँरा इसी तरह उससे विनम्र प्रार्थना करता रहा। युवती उसे देखकर चौंक गई। वह इस प्रकार असंगत प्रश्न पूछने का कारण पूछने लगी। तताँरा को अपनी गलती का अहसास हो गया। उसने युवती से क्षमा माँगी। उसका नाम पूछा। युवती ने अपना नाम वामीरो बताया। तताँरा को वह युवती बहुत पसंद आई। तताँरा ने अपना परिचय दिया और कहा कि वह कल यहीं उसकी प्रतीक्षा करेगा।

वामीरो घर पहुँच कर अंदर ही अंदर बेचैनी का अनुभव करने लगी। उसकी आँखों के समक्ष तताँरा की याचनाप्रद छवि छाई हुई थी। उसने तताँरा के विषय में अनेक कहानियाँ सुन रखी थीं, पर वही तताँरा आज उसके समक्ष एक अलग रूप में खड़ा था। वह नवीन

कल्पनाएँ सँजोने लगी। पर दूसरे गाँव के युवक के साथ विवाह संबंध स्थापित करना असंभव था। किसी तरह रात बीत गई। दोनों ही व्याकुल थे। वे नव-मिलन की प्रतीक्षा कर रहे थे। तताँरा अगले दिन संध्या से काफी समय पहले समुद्र किनारे पहुँच गया और वामीरो की प्रतीक्षा करने लगा। नियत समय वामीरो वहाँ आई। दोनों ने मूक भाषा में वार्तालाप किया। अब यह मिलन रोज़ का क्रम बन गया।

दोनों के विषय में अफवाहें फैलने लगीं। कुछ समय बाद पास के गाँव में पशु-पर्व का आयोजन किया गया। पशु-पर्व में हृष्ट-पुष्ट पशुओं के प्रदर्शन के अतिरिक्त पशुओं से युवकों की शक्ति परीक्षा प्रतियोगिता भी होती है। बाद में नृत्य-संगीत और भोजन का आयोजन होता है। तताँरा व्याकुल होकर वामीरो को ढूँढ़ने लगा। नारियल के झुंड के एक पेड़ के पीछे उसे वामीरो दिखाई दे गई। तताँरा को देखकर वह फूट-फूट कर रोने लगी। तताँरा विह्वल हो गया। वामीरो के रुदन स्वर को सुनकर उसकी माँ वहाँ पहुँची और दोनों को देखकर आग बबूला हो उठी। उसने तताँरा को तरह-तरह के वचन कहकर अपमानित किया। गाँव के लोग भी तताँरा के विरोध में आवाज़ें उठाने लगे। तताँरा भी गुस्से से भर उठा। अनायास उसका हाथ तलवार की मूठ पर जा टिका। क्रोध् में उसने तलवार निकालकर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा। वह तलवार को अपनी ओर खींचते हुए दूर चला गया। अचानक जहाँ तक लकीर खिंच गई थी, वहाँ एक दरार होने लगी। मानो धरती दो टुकड़ों में बँट गई हो। वामीरो रोती-चीखती दौड़ी जा रही थी।

द्वीप के दो टुकड़े हो चुके थे। एक तरफ तताँरा था और दूसरी तरफ वामीरो। तताँरा को जैसे ही होश आया, उसने देखा उसकी तरफ का द्वीप समुद्र में धँसने लगा है। उसने छलाँग लगाकर जैसे ही द्वीप का दूसरा सिरा थामना चाहा वैसे ही उसकी पकड़ ढीली पड़ गई। वह समुद्र की सतह की तरफ फिसलने लगा। उसके मुख से चीख निकली-वामीरो-वामीरो-वामीरो! उधर वामीरो थी जो 'तताँरा-तताँरा पुकार रही थी।

तताँरा लहूलुहान हो चुका था ... वह अचेत हो गया। बहता हुआ तताँरा कहाँ पहुँचा, बाद में उसका क्या हुआ, कोई नहीं जानता। वामीरो पागल हो गई। वह हर समय तताँरा को खोजती हुई उसी जगह पहुँच जाती और घंटों बैठी रहती। उसने खाना-पीना छोड़ दिया। लोगों ने उसे ढूँढ़ने की बहुत कोशिश की किंतु कोई सुराग नहीं मिला।आज दोनों में से कोई नहीं है, किंतु यह प्रेम कथा घर-घर में सुनाई जाती है। तताँरा की तलवार से कार - निकोबार के जो दो टुकड़े हुए उसमें दूसरा लिटिल अंदमान है। इस प्रदेश के लोग इस घटना केबाद दूसरे गाँवों में भी आपसी वैवाहिक संबंध करने लगे। तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु शायद इसी सुखद परिवर्तन के लिए थी।